International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 1; January 2017; Page No. 31-32

कामकाजी महिलाओं द्वारा उनका वित्तीय प्रबंधन

विवेक गुप्ता

शोध छात्र (हिंदी विभाग), महाराज विनायक ग्लोबल यूनिवर्सिटी, आमेर, दिल्ली-जयपुर राजमार्ग, जयपुर, राजस्थान, भारत।

प्रस्तावना

'स्त्री' सदा-सर्वदा से, समाज के हर बुद्धिजीवी के सामने एक ऐसा ज्वलंत प्रश्न रहा है, जिसका उत्तर पूरी संतुष्टि के साथ देना किसी के लिए संभव नहीं हो पाया। पिछली सदी महिला सशक्तिकरण की सदी रही। साहित्यकारों, समाजशास्त्रियों, राजनीतिज्ञों, अर्थशास्त्रियों इत्यादि सभी बुद्धिजीवियों ने महिला सशक्तिकरण के अनेकों उपाय सुझाए हैं। इन सब उपायों में, मेरी दृष्टि में महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण सबसे कारगर उपाय है। महिलाओं ने भी इस दिशा में कदम आगे बढ़ाये हैं। अपने आर्थिक सशक्तिकरण के लिए मिलने वाले मौकों को उन्होंने हाथों-हाथ लिया और हर क्षेत्र में स्वयं को सिद्ध किया है। इस शोध के माध्यम से इसी बात को परखने का प्रयास किया गया है कि आर्थिक रूप से सशक्त महिलाएँ अपने वित्तीय प्रंबधन के प्रति कितनी जागरूक हैं।

पिछले दशकों में महिलाएँ सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक रूप से सशक्त हुई हैं। पिछली सदी महिला जागरण की सदी रही है। 20वीं सदी महिला सशक्तिकरण की दिशा में मील का पत्थर साबित हुई है। आज स्कूल, कॉलेज में जाने वाली लड़कियों की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि दर्ज की जा रही है। महिलाओं का एक बड़ा तबका घर की चारदीवारी और अन्य सामाजिक बंधनों को तोड़ कर, बाहर निकल रहा है। सरकार, महिलाओं को कामकाजी क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए समुचित अवसर प्रदान कर रही है। सरकारी नौकरियों में भी महिलाओं की भागीदारी सुनश्चित करने के लिए विशेष अवसर प्रदान किए जा रहे हैं। निजी क्षेत्र में भी महिलाओं की भागीदारी पिछले दो दशकों में बढ़ी है। आज एयर होस्टेस, नर्स, हॉस्पिटैलिटी, बी.पी.ओ., ऑफिस डेस्क मैनेजर आदि कुछ ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ महिलाओं का लगभग वर्चस्व स्थापित है। इन सभी क्षेत्रों में महिलाओं का लगभग एकाधिकार है। निजी क्षेत्र की दिग्गज कम्पनियों जैसे आई.सी.आई.सी.आई. बैंक, पेप्सिको, विनती आर्गेनिकस, बायोकॉन आदि की बॉस महिलाएँ हैं। इन सभी कंपनियो को कुशलतापूर्वक चला कर, महिलाएँ अपना लोहा मनवा चुकी है और सिद्ध कर चुकी हैं कि यदि मौका मिलेगा तो औरत भी किसी से कम नहीं है। भारत के उच्चतम न्यायलय का मानना है कि औरतों का आर्थिक सशक्तिकरण वक्त की जरूरत है।[1] परंतु वर्जनाओं को तोड़कर, घर से बाहर निकल चुकी महिलाएँ, अभी भी वित्तीय मामलों के प्रबंधन में, पुरुषों पर निर्भर हैं। आर्थिक रूप से सशक्त महिलाएँ अपने वित्तीय प्रबंधन के बारे में क्या सोचती हैं और कितनी कुशलता से महिलाएँ अपना वित्तीय प्रबंधन कर पाती हैं, इसी का पता लगाने के लिए दिल्ली-एन.सी.आर. की लगभग 700 कामकाजी महिलाओं पर, एक प्रश्न श्रृंखला के माध्यम से सर्वेक्षण किया गया, जिसके निम्न परिणाम निकल कर सामने आए :-

i) कामकाजी महिलाओं का लगभग 30% सरकारी क्षेत्र में, 14% महिलाएँ अर्द्ध-सरकारी क्षेत्र में और शेष 56% महिलाएँ निजी क्षेत्र में कार्यरत हैं।
ii) सरकारी और अर्द्ध-सरकारी क्षेत्र में काम करने वाली 44% महिलाओं में से 12% महिलाएँ सुमह 'ख', 56% महिलाएँ समूह 'ग', 28% महिलाएँ समूह 'घ' और केवल 4% महिलाएँ समूह 'क' में कार्यरत हैं।
iii) कामकाजी महिलाओं की औसत आयु वर्ग 31-40 वर्ष के बीच है।
iv) कामकाजी महिलाओं का 45% अभी अविवाहित है।
v) कामकाजी महिलाओं में से 78% को वेतन बैंक खाते में और शेष 22% को वेतन हाथ में मिलता है।
vi) लगभग 80% महिलाओं को बैंकिंग की पूर्ण या आंशिक जानकारी है। 20% महिलाएँ बैंकिंग व्यवस्था में जैसे पैसे निकलना, जमा करना, बैंक के फॉर्म भरना आदि के अन्य लोगों पर निर्भर हैं। इसके लिए वे या तो घर से किसी को साथ लेकर जाती हैं या बैंक में ही किसी से अपना यह काम करवा लेती हैं।
vii) कामकाजी महिलाओं में केवल 16% को ही वित्तीय उपकरणों जैसे म्यूच्यूअल फण्ड, शेयर बाज़ार, सावधि जमा, बीमा इत्यादि की जानकारी है। इन 16% में से 80% महिलाओं की आयु 40 वर्ष से कम है।
viii) लगभग 93% महिलाएँ अपने वित्तीय प्रबंधन के लिए अपने पति, भाई या पिता पर निर्भर रहती हैं।
ix) कामकाजी महिलाओं में से केवल 17% महिलाएँ ही अपने भविष्य की बचत योजनाओं में सक्रिय भूमिका निभाती है। परंतु इन 17% महिलाओं में से भी अधिकतर अपने वित्त संबंधी निर्णयों में अपने पति, भाई या पिता की सलाह को ही प्राथमिकता देती हैं। शेष 83% महिलाएँ अपने भविष्य की बचत योजनाओं से जुड़े निर्णय पूरी तरह से अपने पति, भाई या पिता पर छोड़ देती हैं।
x) सर्वेक्षण में 86% महिलाएँ मानती हैं कि उन्हें वित्तीय उपकरणों में दिलचस्पी है और वे इसमें सक्रिय भूमिका निभाना चाहती हैं। वे इस बारे में सोचती तो हैं परंतु घर के कामकाज और घरेलू जिम्मेदारियों से उन्हें फुर्सत नहीं मिलती। जबकि लगभग 70% महिलाएँ साथ में यह भी स्वीकार करती हैं कि वित्तीय प्रबंधन, सर दर्द का काम है और वह इसे बिल्कुल नहीं करना चाहेंगी।

उपरोक्त सर्वेक्षण से यह तो स्पष्ट है कि महिलाएँ किसी से कम नहीं हैं। उन्होंने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपना लोहा मनवाया है और अपनी योग्यता को सिद्ध किया है। परंतु आज भी महिलाएँ, आर्थिक रूप से पूर्णरूपेण आज़ाद नहीं हो पाई हैं। उच्चतम न्यायालय का मानना है कि महिलाओं का वास्तविक सशक्तिकरण तभी होगा जबकि वे उन्हें प्राप्त अधिकारों का लाभ उठा पाएं और साथ ही आर्थिक रूप से सशक्त हों।[2] अपने वित्तीय प्रबंधन के लिए आज भी महिलाएँ पुरुषों पर ही निर्भर हैं। इसी को रेखांकित करती हुई प्रसिद्ध साहित्यकार रमणिका गुप्ता लिखती हैं – "अब स्त्रियों को अपनी चुप्पी खुद ही तोड़नी होगी। घर परिवार की इज्ज़त-सम्मान के छद्म से बाहर निकलना होगा।"[3] महिलाओं को अपनी क्षमताओं को पहचानना होगा। जब महिलाएँ घर की चारदीवारी से बाहर निकल कर अपने लिए एक अलग मकाम बना सकती हैं, तो उन्हें अपने वित्तीय प्रबंधन से जुड़े निर्णय भी स्वयं ही करने चाहिए। महिलाओं को अपनी निर्णय लेने की योग्यता और क्षमता को स्वयं पहचानना होगा। उन्हें अपना वित्तीय प्रबंधन स्वयं करना सीखना होगा। इसके लिए एक या दो नहीं वरन स्त्रियों को एक समूह के रूप में प्रयास करना होगा। सामूहिक प्रयास से आशातीत सफलता मिलने की संभावना अधिक रहती है – "जब एक या दो स्त्रियाँ परंपराओं को तोड़ने का प्रयास करती हैं तो उन्हें अपेक्षित सफ़लता नहीं मिलती, पर जब स्त्रियों का पूरा समूह विरोध में उतर आता है तो समाज को उनके आगे झुकना ही पड़ता है।"[4] स्त्रियों को सामाजिक संसाधनों पर अपना नियन्त्रण करना होगा। सामाजिक संसाधनों पर अपने नियन्त्रण के कारण ही पुरुष स्वयं को प्रकृति और समाज में उत्कृष्ट समझते हैं। इन्हीं संसाधनों के प्रबंधन की क्षमता को स्त्रियों को खुद

में विकसित करना है – "स्त्री को सभी संसाधनों पर अपना नियन्त्रण रखना होगा। ये संसाधन हैं – भौतिक, मानवीय, बौद्धिक, आर्थिक और आत्मिक। स्त्री को अब स्वयं मूल्यों को तय करने की शक्ति रखनी होगी।"[5] महिलाएँ सदियों से घर का बजट बड़ी कुशलतापूर्वक प्रबंधित करती आई हैं। वे घरेलू वित्तीय प्रबंधन में सिद्धहस्त हैं। अपने भविष्य के निवेश के लिए भी, उन्हें हिचकिचाहट महसूस नहीं करनी चाहिए – "जो स्त्री घर का सुचारू रूप से संचालन कर सकती है, कोई कारण नहीं है वह विश्व का संचालन न कर सके, क्योंकि घरों में ही पालित होकर यह विश्व इतना बड़ा हुआ है।"[6] वित्तीय सेहत भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण है, जितना घरेलू कामकाज और परिवार। यदि वे आवश्यकता महसूस करें तो वित्तीय प्रबंधन के लिए किसी वित्तीय सलाहकार की साहयता ली जा सकती है। घर के लोगों से भी सलाह लेने में कोई बुराई नहीं है, परंतु अंतिम निर्णय महिलाओं को अपने विवेक से ही करना चाहिए। उन्हें पुरूषों पर अपनी निर्भरता कम करनी होगी। उन्हें अपने-आप में यह विशवास जगाना होगा कि वित्तीय प्रबंधन इतना मुश्किल भी नहीं है। वित्तीय प्रबंधन पूरी तरह से महिलाओं के हाथ में आते ही, महिला सशक्तिकरण एक नए युग में प्रवेश करेगा ऐसा मेरा ध्रुव विशवास है।

संदर्भ

1. दैनिक जागरण, नई दिल्ली संस्करण, 10 फ़रवरी 2016।
2. दैनिक जागरण, नई दिल्ली संस्करण, 10 फ़रवरी 2016।
3. रमणिका गुप्ता, स्त्री मुक्ति : संघर्ष और इतिहास, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली- 110002 , पृ.- 172।
4. अंजु दुआ जैमिनी, मोर्चे पर स्त्री, कल्याणी शिक्षा परिषद्, नई दिल्ली- 110002, पृ.- 187।
5. अंजु दुआ जैमिनी, मोर्चे पर स्त्री, कल्याणी शिक्षा परिषद्, नई दिल्ली- 110002, पृ.- 172।
6. सं-संजय गर्ग, स्त्री विमर्श का कालजयी इतिहास, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली- 110002 , पृ.- 91।